दैनिक भास्कर

16th March, 2019

city भास्कर सिटी SPORTS / ACTIVITY

# जादूगरों का हुआ सम्मान

सिटी रिपोर्टर | जबलपुर

मैजिकल परफॉर्मेंसेस ने सबको रोमांचित कर दिया। यही नहीं, ख्यातिलब्ध जादूगर सम्मानित भी हुए। यह नजारा था शहीद स्मारक का, जहाँ जादू स्वाभिमान दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के अतिथियों में कैबिनेट मंत्री लखन घनघोरिया, विधायक विनय सक्सेना, समाजसेवी बाबू विश्वमोहन, डीसी जैन, डॉ. हरिशंकर दुबे मुख्य रूप से शामिल रहे। अतिथियों ने राजस्थान के जादूगर शिवकुमार, बीकानेर के जादूगर मनोज कौशिक और अजमेर के जादूगर प्रहलाद राय को सम्मानित किया। इसके साथ ही कोलकाता के जादूगर प्रिंस सिल को लाइफटाइम अचीवमेंट प्रदान किया गया। इस अवसर पर अतिथियों ने विशेष डाक टिकट का विमोचन भी किया। जादूगर एसके निगम ने सम्मानित जादूगरों का परिचय दिया। कार्यक्रम की शुरूआत में एसपी शुक्ला, शिब्बू दादा, रविशंकर श्रीवास्तव एवं श्रीमती भारती ने शुभकामना गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में डीएस दुग्गल, हरीश कुमार गंभीर, बच्चन श्रीवास्तव, अंकिता निगम, नीतू पांडेय, प्रतुल श्रीवास्तव समेत अन्य लोग मौजूद रहे। संचालन राजेश पाठक प्रवीण, माधुरी मिश्रा एवं आभार विजय जायसवाल ने व्यक्त किया। (आर)

# आईसीयू पर जादू कला

सिटी रिपोर्टर, जबलपुर| जादू की दुनिया सबको रोमांचित कर जाती है। मंच पर जब कोई जादूगर अपने हैरत अंगेज करतब दिखाता है, तो लोग दाँतों तले अँगुलियाँ दबा लेते हैं, लेकिन इन करतबों के पीछे एक जादूगर को कितनी मेहनत करनी पड़ती है, इससे हर कोई वाकिफ नहीं होता। आज हम आपको ऐसे चार जादूगरों की कहानियों से रू-ब-रू करा रहे हैं, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कला से पहचान हासिल की। (आर)पी-5

**टाइम एंड स्पेस कॉम्बिनेशन** | टाइम एंड स्पेस का कॉम्बिनेशन मैजिक है। मुझे याद है फुटपाथों पर जब मैं मदारियों को जादू करते देखता था, तो बहुत आश्चर्य होता था। वे सिक्के का खेल दिखाते थे। मैंने बहुत ध्यान से देखा और यह खेल सीख लिया और सीखने का सिलसिला यहाँ से शुरू हुआ। लोग जादू को तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत से जुड़ा मानते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। जादू खेल और कला है। दुनिया में चमत्कार जैसी कोई चीज नहीं होती। हम अपनी कला से समाजिक कुरीतियों के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं, इसके बाद भी भारत में जादू कला इन दिनों आईसीयू में है।

**जादूगर प्रहलाद राय, अजमेर**

**आँखों का धोखा ही जादू** | जादू कला विश्व को प्राचीन भारत के मनीषियों की देन है और यह भारत की अनुपम सांस्कृतिक धरोहर है। यह कला कुछ गिने-चुने जादूगरों के कारण ही जीवित बची हुई। ऐसे में सरकार को चाहिए कि वह जादू की कला को राष्ट्रीय कला घोषित करके संरक्षित करे। हमारे इस आध्यात्मिक देश में पाखंडी लोग अध्यात्म के नाम पर जादू के करतब दिखाकर भ्रमित कर रहे हैं। मैं अपनी कला से ऐसे लोगों को यह बताता हूँ कि चमत्कार जैसा कुछ नहीं होता, बल्कि आँखों का धोखा ही जादू है।

**जादूगर शिवकुमार, अलवर**

**जादूगर बनते नहीं, पैदा होते** | मुझे लगता है, जादूगर बनते नहीं, पैदा होते हैं। किसी को एंटरटेन करना आसान नहीं है। पीसी सरकार सीनियर को देखकर मुझे जादू करने की प्रेरणा मिली। वे किताबें लेने के लिए कहते। 1969 में नाइट क्लब में जादू दिखाता था, उसके मुझे 600 रुपये मिला करते थे। मैं उस समय सिंगर उषा उत्थुप के साथ परफॉर्म करता था। कॉलेज की पढ़ाई के बाद नौकरी की, लेकिन जादू भी जारी रखा। मैंने 1974 में मुँह से बल्ब निकालने वाला जादू परफॉर्म किया। 1977 में पहली बार .22 रायफल से बुलेट कैचिंग एक्ट किया, अब यह एक्ट मैं 12 बोर की रायफल से करता हूँ।

**जादूगर प्रिंस सिल, कोलकाता**

**मेंटल मैजिक करता हूँ** | जादू तो एक उपमा है। हम अक्सर कहते हैं किसी के काम में जादू, किसी की आवाज में जादू है। मैं जब 5वीं कक्षा में था, तब मदारियों को जादू करते देखा करता था। माचिस की डिब्बी से तीलियाँ गायब कर देने वाला जादू मुझे बहुत पसंद था। मुझे याद है मैंने 1 दर्जन मैच बॉक्स खराब किए थे, पर जादू नहीं हुआ। जॉब लगने के बाद मैंने जादू करना छोड़ दिया, लेकिन लंबे अर्से बाद फिर से शुरू किया। मायावी दुनिया को संपादित कर आने वाली पीढ़ियों के लिए जादू संरक्षित करने का काम भी कर रहा हूँ। मैं मेंटल मैजिक करता हूँ।

**जादूगर मनोज कौशिक, बीकानेर**